الجزء ٤

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا
تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾

92. तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पहुंच सकोगे जब तक तुम (अल्लाह की राह में) अपनी महबूब चीज़ों में से ख़र्च न करो, और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जाननेवाला है।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ
اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ
عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ
التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ
فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾

93. तौरात के उतरने से पहले बनी इसराईल के लिए हर खाने की चीज़ ह़लाल थी सिवाए उन (चीज़ों) के जो या'क़ूब (علیہ السلام) ने ख़ुद अपने ऊपर ह़राम कर ली थीं, फ़रमा दें : तौरात लाओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ
بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾

94. फिर उसके बाद भी जो शख़्स अल्लाह पर झूट घड़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۟ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ
اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾

95. फ़रमा दें कि अल्लाह ने सच फ़रमाया है, सो तुम इब्राहीम (علیہ السلام) के दीन की पैरवी करो जो हर बातिल से मुंह मोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह के हो गए थे, और वोह मुशरिकों में से नहीं थे।

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ
لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى
لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ ۚ

96. बेशक सबसे पहला घर जो लोगों (की इबादत) के लिए बनाया गया वोही है जो मक्का में है बरकतवाला है और सारे जहानवालों के लिए (मर्कज़े) हिदायत है।

فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬
وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى
النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ
اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾

97. उसमें खुली निशानियां हैं (उनमें से एक) इब्राहीम (علیہ السلام) की जाए क़ियाम है, और जो इसमें दाख़िल हो गया अमान पा गया, और अल्लाह के लिए लोगों पर उस घर का ह़ज फ़र्ज़ है जो भी उस तक पहुंचने की इस्तिताअ़त रखता हो, और जो (उसका) मुन्किर हो तो बेशक अल्लाह सब जहानों से बेनियाज़ है।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

98. फ़रमा दें : ऐ अह्ले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों करते हो, और अल्लाह तुम्हारे कामों का मुशाहिदा फ़रमा रहा है।

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. फ़रमा दें : ऐ अहले किताब! जो शख़्स ईमान ले आया है तुम उसे अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो, तुम उनकी राह में भी कजी चाहते हो हालां कि तुम (उसके ह़क़ होने पर) ख़ुद गवाह हो, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल से बे ख़बर नहीं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100. ऐ ईमान वालो! अगर तुम अह्ले किताब में से किसी गिरोह का भी केहना मानोगे तो वोह तुम्हारे ईमान (लाने) के बाद फिर तुम्हें कुफ़्र की तरफ़ लौटा देंगे।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ۗ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع ١٠

101. और तुम (अब) किस तरह कुफ़्र करोगे हालां कि तुम वोह (ख़ुश नसीब) हो कि तुम पर अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं और तुम में (ख़ुद) अल्लाह के रसूल (ﷺ) मौजूद हैं, और जो शख़्स अल्लाह (के दामन) को मज़बूत पकड़ लेता है तो उसे ज़रूर सीधी राह की तरफ़ हिदायत की जाती है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

102. ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरा करो जैसे उस से डरने का ह़क़ है और तुम्हारी मौत सिर्फ़ उसी ह़ाल पर आए कि तुम मुसलमान हो।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ

103. और तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और तफ़्रिक़ा मत डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की उस ने'मत को याद करो जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त पैदा

بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ
اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ
مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

कर दी और तुम उसकी ने'मत के बाइस आपसमें भाई भाई हो गए, और तुम (दोज़ख़की) आग के गढ़े के किनारे पर (पहुंच चुके) थे फिर उस ने तुम्हें उस गढ़े से बचा लिया, यूं ही अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि तुम हिदायत पा जाओ।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى
الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

104. और तुम में से ऐसे लोगों की एक जमाअ़त ज़रूर होनी चाहिए जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाएं और भलाई का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और वोही लोग बामुराद हैं।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا
وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۙ﴿۱۰۵﴾

105. और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िर्कों में बट गए थे और जब उनके पास वाज़ेह़ निशानियां आ चुकीं उसके बाद भी इख़्तिलाफ़ करने लगे, और उन ही लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫
اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰۶﴾

106. जिस दिन कई चेहरे सफ़ेद होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे, तो जिन के चेहरे सियाह हो जाएंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया? तो जो कुफ़्र तुम करते रहे थे सो उसके अ़ज़ाब (का मज़ा) चख लो।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ
فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

107. और जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद (रौशन) होंगे तो वोह अल्लाह की रह़मतमें होंगे, और वोह उस में हमेशा रहेंगे।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

108. येह अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम आप पर ह़क़ के साथ पढ़ते हैं, और अल्लाह जहानवालों पर ज़ुल्म नहीं चाहता।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾ ع ۱۱ ۸ ۲

109. और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

110. तुम बेहतरीन उम्मत हो जो सब लोगों (की रहनुमाई) के लिए ज़ाहिर की गई है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना' करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो, और अगर अह्ले किताब भी ईमान ले आते तो यक़ीनन उन के लिए बेह्तर होता, उन में से कुछ ईमानवाले भी हैं और उनमें से अक्सर ना फ़रमान हैं।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

111. येह लोग सताने के सिवा तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे और अगर येह तुम से जंग करें तो तुम्हारे सामने पीठ फेर जाएंगे, फिर उनकी मदद (भी) नहीं की जाएगी।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

112. वोह जहां कहीं भी पाए जाएं उन पर ज़िल्लत मुसल्लत कर दी गई है सिवाए इसके कि उन्हें कहीं अल्लाह के अ़हद से या लोगों के अ़हद से (पनाह दे दी जाए) और वोह अल्लाह के ग़ज़ब के सज़ावार हुए हैं और उन पर मोहताजी मुसल्लत की गई है, येह इस लिए कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और अंबिया को नाह़क़ क़त्ल करते थे, क्यों कि वोह नाफ़रमान हो गए थे और (सरकशी में) ह़दसे बढ़ गए थे।

لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ
الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

113. येह सब बराबर नहीं हैं, अहले किताब में से कुछ लोग हक़ पर (भी) क़ाइम हैं वोह रात की साअ़तों में अल्लाह की आयात की तिलावत करते हैं और सर ब सुजूद रेहते हैं।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ
وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

114. वोह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से मना' करते हैं और नेक कामों में तेज़ी से बढ़ते हैं, और येही लोग नेकूकारों में से हैं।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

115. और येह लोग जो नेक काम भी करें उसकी नाक़द्री नहीं की जाएगी, और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जाननेवाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ
اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

116. यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र किया है न उनके माल उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कुछ भी बचा सकेंगे और न उनकी औलाद, और वोही लोग जहन्नमी हैं, जो उस में हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ
اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ
اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

117. (येह लोग) जो माल (भी) इस दुनिया की ज़िन्दगी में ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा जैसी है जिस में सख़्त पाला हो (और) वोह ऐसी क़ौम की खेती पर जा पड़े जो अपनी जानों पर ज़ुल्म करती हो और वोह उसे तबाह कर दे, और अल्लाहने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वोह ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا
بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ

118. ऐ ईमानवालो! तुम ग़ैरों को (अपना) राज़दार न बनाओ वोह तुम्हारी निस्बत फ़ितना अंगेज़ी में (कभी)

خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ
الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖۚ وَمَا
تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا
لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾
هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ
وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا
لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا
عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ
الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾
اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫
وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ
وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ
كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ ع ۱۲ ۱۱ ۳
وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ لا
اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ
تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

कमी नहीं करेंगे, वोह तुम्हें सख़्त तक्लीफ़ पहुंचने की ख़्वाहिश रखते हैं, बा'ज़ तो उनकी जबानों से ख़ुद ज़ाहिर हो चुका है, और जो (अ़दावत) उनके सीनों में छुपा रखी है वोह उससे (भी) बढ़ कर है । हमने तुम्हारे लिए निशानियां वाज़ेह़ कर दी हैं अगर तुम्हें अ़क़्ल हो।

119. आगाह हो जाओ! तुम वोह लोग हो कि उन से मुह़ब्बत रखते हो और वोह तुम्हें पसंद (तक) नहीं करते हालांकि तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब वोह तुम से मिलते हैं (तो) केहते हैं हम ईमान ले आए हैं, और जब अकेले होते हैं तो तुम पर ग़ुस्से से उंगलियां चबाते हैं, फ़रमा दें : मर जाओ अपनी घुटन में, बेशक अल्लाह दिलों की (पोशीदह) बातों को ख़ूब जानने वाला है।

120. अगर तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरी लगती है, और तुम्हें कोई रंज पहुंचे तो वोह उस से ख़ुश होते हैं, और अगर तुम सब्र करते रहो और तक़्वा इख़्तियार किए रखो तो उनका फ़रेब तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जो कुछ वोह कर रहे हैं बेशक अल्लाह उस पर अ़ह़ाता फ़रमाए हुए है।

121. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब आप सुब्ह़ सवेरे अपने दरे दौलत से रवाना हो कर मुसलमानों को (ग़ज़ूवअे ओह़द के मौक़े' पर) जंग के लिए मोरचों पर ठेहरा रहे थे, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

122. जब तुम में से (बनू सलमा खज़रज और बनू हारिसा औस) दो गिरोहों का इरादा हुवा कि बुज़दिली कर

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾

जाएं, हालांकि अल्लाह उन दोनों का मददगार था, और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

123. और अल्लाहने बद्र में तुम्हारी मदद फ़रमाई हालांकि तुम (उस वक़्त) बिल्कुल बे सरोसामान थे, पस अल्लाह से डरा करो ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

124. जब आप मुसलमानों से फ़रमा रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हज़ार उतारे हुऐ फ़रिश्तों के ज़रीऐ तुम्हारी मदद फ़रमाए।

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125. हां अगर तुम सब्र करते रहो और परहेज़गारी क़ाइम रखो और वोह (कुफ़्फ़ार) तुम पर उसी वक़्त (पूरे) जोश से हमला आवर हो जाएं तो तुम्हारा रब पाँच हज़ार निशानवाले फ़रिश्तों के ज़रीए तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।

وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ۙ

126. और अल्लाह ने उस (मदद) को महज़ तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी बनाया और इस लिए कि उससे तुम्हारे दिल मुत्मइन हो जाएं, और मदद तो सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से होती है जो बड़ा ग़ालिब हिक्मतवाला है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾

127. (मज़ीद) इस लिए कि (अल्लाह) काफ़िरों के एक गिरोह को हलाक कर दे या उन्हें ज़लील कर दे सो वोह नाकाम हो कर वापस पलट जाएं।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128. (ऐ हबीब! अब) आपका उस मुआमले से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं चाहे तो अल्लाह उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या उन्हें अ़ज़ाब दे क्योंकि वोह ज़ालिम हैं।

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي
الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ ع

129. और अल्लाह ही के लिए जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है। वोह जिसे चाहे बख़्श दे जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا
الرِّبٰٓوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ ج

130. ऐ ईमानवालो! दोगुना और चौगुना कर के सूद मत खाया करो, और अल्लाह से डरा करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْۤ اُعِدَّتْ
لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ ج

131. और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ج

132. और अल्लाह की और रसूल (ﷺ) की फ़रमां बरदारी करते रहो ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ
وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ لا

133. और अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ तेज़ी से बढ़ो जिस की वुस्अत में सब आस्मान और ज़मीन आ जाते हैं, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गई है।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَ
الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ
وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ ج

134. येह वोह लोग हैं जो फ़राख़ी और तंगी (दोनों हालतों) में ख़र्च करते हैं और ग़ुस्सा ज़ब्त करनेवाले हैं और लोगों से (उनकी ग़लतियों पर) दरगुज़र करनेवाले हैं, और अल्लाह एह़सान करनेवालों से मुह़ब्बत फ़रमाता है।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ
ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ

135. और (येह) ऐसे लोग हैं कि जब कोई बुराई कर बैठते हैं या अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठते हैं तो अल्लाह

فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا
عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

का ज़िक्र करते हैं फिर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी माँगते हैं, और अल्लाह के सिवा गुनाहों की बख़्शिश कौन करता है, और फिर भी जो गुनाह वोह कर बैठे थे उन पर जानबूझ कर इसरार भी नहीं करते।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ
رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ
اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ ؕ

136. येह वोह लोग हैं जिनकी जज़ा उनके रब की तरफ़ से मग्फ़िरत है और जन्नतें हैं जिनके नीचे नेहरें रवां हैं वोह उनमें हमेशा रेहनेवाले हैं, और (नेक) अ़मल करने वालों का क्या ही अच्छा सिला है।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ
فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

137. तुम से पेहले (गुज़िश्ता उम्मतों के लिए कानूने क़ुदरत के) बहुत से ज़ाबते गुज़र चुके हैं सो तुम ज़मीन में चला फिरा करो और देखा करो कि झुटलानेवालों का क्या अंजाम हुआ।

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ
مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

138. येह क़ुर्आन लोगों के लिए वाज़ेह बयान है और हिदायत है और परहेज़गारों के लिए नसीह़त है।

وَ لَا تَهِنُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَنْتُمُ
الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

139. और तुम हिम्मत न हारो और न ग़म करो और तुम ही ग़ालिब आओगे अगर तुम (कामिल) ईमान रखते हो।

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ
الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَ تِلْكَ
الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ
وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَ يَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ ۙ

140. अगर तुम्हें (अब) कोई ज़ख़्म लगा है तो (याद रखो कि) उन लोगों को भी इसी तरह़ का ज़ख़्म लग चुका है, और येह दिन हैं जिन्हें हम लोगों के दरम्यान फेरते रेहते हैं, और येह (गरदिशे अय्याम) इस लिए है कि अल्लाह अहले ईमान की पेहचान करा दे और तुम में से बा'ज़ को शहादत का रुत्बा अ़ता करे, और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

وَ لِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

141. और येह इस लिए (भी) है कि अल्लाह ईमान वालों

को (मज़ीद) निखार दे (या'नी पाको साफ़ कर दे) और काफ़िरों को मिटा दे।

وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

142. क्या तुम येह गुमान किए हुए हो कि तुम (यूंही) जन्नतमें चले जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करनेवालों को परखा ही नहीं है और न ही सब्र करनेवालों को जांचा है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ لَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَ يَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

143. और तुम तो उसका सामना करने से पेहले (शहादत की) मौत की तमन्ना किया करते थे, सो अब तुमने उसे अपनी आँखों के सामने देख लिया है।

وَ لَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۪ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾ ع ١٤ ٥

144. और मुहम्मद (ﷺ भी तो) रसूल ही हैं (न कि खुदा), आप से पेहले भी कई पयग़म्बर (मसाइब और तक्लीफ़ें झेलते हुऐ इस दुनिया से) गुज़र चुके हैं, फिर अगर वोह वफ़ात फ़रमा जाएं या शहीद कर दिए जाएं तो क्या तुम अपने (पिछले मज़हब की तरफ़) उलटे पाँव फिर जाओगे (या'नी क्या उनकी वफ़ात या शहादत को मआ़ज़ल्लाह दीने इस्लाम के ह़क़ न होने पर या उनके सच्चे रसूल न होने पर मह़्मूल करोगे), और जो कोई अपने उलटे पाँव फिरेगा तो वोह अल्लाह का हरगिज़ कुछ नहीं बिगाड़ेगा, और अल्लाह अ़नक़रीब (मसाइब पर साबित क़दम रह कर) शुक्र करनेवालों को जज़ा अ़ता फ़रमाएगा।

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَ مَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

145. और कोई शख़्स अल्लाह के हुक्म के बिग़ैर नहीं मर सक्ता (उसका) वक़्त लिखा हुआ है, और जो शख़्स दुनिया का इन्आ़म चाहता है हम उसे उस में से दे देते हैं, और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहता है हम उसे उसमें से दे देते हैं, और हम अ़नक़रीब शुक्र गुज़ारों को (ख़ूब) सिला देंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَ مَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

وَ كَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ مَا ضَعُفُوْا وَ مَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾

146. और कितने ही अंबिया ऐसे हुए जिन्हों ने जिहाद किया उनके साथ बहुत से अल्लाहवाले (अवलिया) भी शरीक हुए, तो न उन्होंने उन मुसीबतों के बाइस जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुंचीं हिम्मत हारी और न वोह कमज़ोर पड़े और न वोह झुके, और अल्लाह सब्र करनेवालों से मुहब्बत करता है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِيْۤ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

147. और उनका केहना कुछ न था सिवाए इस इल्तिजा के कि ऐ हमारे रब! हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारे काम में हमसे होने वाली ज़ियादतियों से दरगुज़र फ़रमा और हमें (अपनी राहमें) साबित क़दम रख और हमें काफ़िरों पर ग़ल्बा अ़ता फ़रमा।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ ع ۱۵ ۵ ۶

148. पस अल्लाहने उन्हें दुनियाका भी इनाम अ़ता फ़रमाया और आख़िरतके भी उ़मदा अज्रसे नवाज़ा, और अल्लाह (उन) नेकू कारों से प्यार करता है (जो सिर्फ़ उसीको चाहते हैं)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

149. ऐ ईमानवालो! अगर तुमने काफ़िरों का कहा माना तो वोह तुम्हें उलटे पाँव (कुफ़्रकी जानिब) फेर देंगे फिर तुम नुक़्सान उठाते हुए पलटोगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَ هُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿۱۵۰﴾

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है, और वोह सबसे बेहतर मदद फ़रमानेवाला है।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

151. हम अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में (तुम्हारा) रो'ब डाल देंगे इस वजह से कि उन्होंने उस चीज़को अल्लाह का शरीक ठेहराया है, जिसके लिए अल्लाहने कोई सनद नहीं उतारी, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

ज़ालिमों का (वोह) ठिकाना बहुत ही बुरा है।

وَ لَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَ لَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾

152. और बेशक अल्लाह ने तुम्हें अपना वा'दा सच कर दिखाया जब तुम उसके हुक्म से उन्हें क़त्ल कर रहे थे यहां तक कि तुमने बुज़दिली की और (रसूल ﷺ के) हुक्म के बारे में झगड़ने लगे और तुम ने उसके बाद (उनकी) ना फ़रमानी की जब कि अल्लाह ने तुम्हें वोह (फ़तह़) दिखा दी थी जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया का ख़्वाहिशमंद था और तुम में से कोई आख़िरतका तलबगार था फिर उसने तुम्हें उनसे (मग़्लूब करके) फेर दिया ताकि वोह तुम्हें आज़माए (बाद अज़ां) उसने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया, और अल्लाह अह्ले ईमान पर बड़े फ़ज़्लवाला है।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

153. जब तुम (अफ़रा तफ़री की ह़ालत में) भागे जा रहे थे और किसी को मुड़कर नहीं देखते थे और रसूल (ﷺ) उस जमाअ़त में (खड़े) जो तुम्हारे पीछे (साबित क़दम) रही थी तुम्हें पुकार रहे थे फिर उसने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया (येह नसीह़तो तरबियत थी) ताकि तुम उस पर जो तुम्हारे हाथ से जाता रहा और उस मुसीबत पर जो तुम पर आन पड़ी, रंज न करो, और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَ طَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا

154. फिर उसने ग़म के बाद तुम पर (तस्कीन के लिए) ग़ुनूदगी की सूरत में अमान उतारी जो तुम में से एक जमाअ़त पर छा गई और एक गिरोह को (जो मुनाफ़िकों का था) सिर्फ़ अपनी जानोंकी फ़िक्र पड़ी हुई थी, वोह अल्लाह के साथ नाह़क़ गुमान करते थे जो (मह़ज़) जाहिलियत के गुमान थे, वोह केहते हैं : क्या इस काम में

مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ
الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ یُخْفُوْنَ فِیْۤ
اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا یُبْدُوْنَ لَكَ ؕ
یَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ
فِیْ بُیُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِیْنَ كُتِبَ
عَلَیْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰی مَضَاجِعِهِمْ ۚ
وَ لِیَبْتَلِیَ اللّٰهُ مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ وَ
لِیُمَحِّصَ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾

हमारे लिए भी कुछ (इख़्तियार) है? फ़रमा दें कि सब काम अल्लाह ही के हाथ में है, वोह अपने दिलों में वोह बातें छुपाए हुए हैं जो आप पर ज़ाहिर नहीं होने देते। केहते हैं कि अगर इस काम में कुछ हमारा इख़्तियार होता तो हम उस जगह क़त्ल न किए जाते। फ़रमा दें : अगर तुम अपने घरों में (भी) होते, तब भी जिनका मारा जाना लिखा जा चुका था वोह ज़रूर अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल कर आ जाते और येह इस लिए (किया गया)है कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उसे आज़माए और जो (वस्वसे) तुम्हारे दिलों में हैं, उन्हें ख़ूब साफ़ कर दे और अल्लाह सीनों की बात ख़ूब जानता है।

اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَی
الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ
بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ
عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۵۵﴾ ع ۱۶

155. बेशक जो लोग तुममें से उस दिन भाग खड़े हुए थे जब दोनों फ़ौजें आपस में गुथ्थम गुथ्था हो गई थीं तो उन्हें महज़ शैतानने फुसला दिया था, उनके किसी अ़मल के बाइ़स जिसके वोह मुर्तकिब हुए, बेशक अल्लाह ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया, यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़े हिल्मवाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ
اِذَا ضَرَبُوْا فِی الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا
غُزًّی لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا
قُتِلُوْا ۚ لِیَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً
فِیْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ
وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۱۵۶﴾

156. ऐ ईमानवालो! तुम उन काफ़िरों की तरह न हो जाओ जो अपने उन भाईयोंके बारे में येह केहते हैं जो (कहीं) सफ़र पर गए हों या जिहाद कर रहे हों (और वहां मर जाएं)कि अगर वोह हमारे पास होते तो न मरते और न क़त्ल किए जाते, ताकि अल्लाह उस (गुमान) को उनके दिलों में ह़सरत बनाए रख्खे, और अल्लाह ही ज़िन्दा रखता और मारता है, और अल्लाह तुम्हारे आ'माल ख़ूब देख रहा है।

وَ لَئِنْ قُتِلْتُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَوْ
مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَحْمَةٌ
خَیْرٌ مِّمَّا یَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

157. और अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिए जाओ या तुम्हें मौत आ जाए तो अल्लाहकी मग़फ़िरत और रहमत उस (मालो मताअ़) से बहुत बेहतर है जो तुम जमा' करते हो।

وَ لَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِ اِلَى اللّٰهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

158. और अगर तुम मर जाओ या मारे जाओ तो तुम (सब) अल्लाह ही के हुज़ूर जमा' किए जाओगे।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَ لَوْ
كُنْتَ فَظًّا غَلِیْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا
مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ
اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِ ۚ
فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِیْنَ ﴿۱۵۹﴾

159. (ऐ ह़बीबे वाला सिफ़ात!) पस अल्लाह की कैसी रहमत है कि आप उनके लिए नर्म तबा' हैं और अगर आप तुन्द ख़ू (और) सख़्त दिल होते तो लोग आपके गिर्द से छट कर भाग जाते, सो आप उनसे दरगुज़र फ़रमाया करें और उनके लिए बख़्शिश मांगा करें और (अहम) कामों में उनसे मश्वरा किया करें, फिर जब आप पुख़्ता इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा किया करें, बेशक अल्लाह तवक्कल वालों से मुह़ब्बत करता है।

اِنْ یَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ
وَ اِنْ یَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِیْ
یَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

160. अगर अल्लाह तुम्हारी मदद फ़रमाए तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सक्ता और अगर वोह तुम्हें बे सहारा छोड़ दे तो फ़िर कौन ऐसा है जो उसके बाद तुम्हारी मदद कर सके, और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

وَ مَا كَانَ لِنَبِیٍّ اَنْ یَّغُلَّ ؕ وَ مَنْ
یَّغْلُلْ یَاْتِ بِمَا غَلَّ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾

161. और किसी नबी की निस्बत येह गुमान ही मुमकिन नहीं कि वोह कुछ छुपाएगा, और जो कोई (किसी का ह़क़) छुपाता है तो क़ियामत के दिन उसे वोह लाना पड़ेगा जो उसने छुपाया था फिर हर शख़्स को उसके अ़मल का पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ

162. भला वोह शख़्स जो अल्लाह की मरज़ी के ताबे' हो

بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ
جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾

गया उस शख़्स की तरह कैसे हो सक्ता है जो अल्लाह के ग़ज़ब का सज़ावार हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वोह बहुत ही बुरी जगह है।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

163. अल्लाह के हुज़ूर उनके मुख़्तलिफ़ दरजात हैं, और अल्लाह उनके आ'माल को ख़ूब देखता है।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ
كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۴﴾

164. बेशक अल्लाहने मुसलमानों पर बड़ा एहसान फ़रमाया कि उनमें उन्हीं में से (अ़ज़मतवाला) रसूल (ﷺ) भेजा जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताबो हिक्मत की ता'लीम देता है अगरचे वोह लोग उससे पहले खुली गुमराही में थे

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ
اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ
قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶۵﴾

165. क्या जब तुम्हें एक मुसीबत आ पहुंची हालांकि तुम उस से दो चंद (दुश्मन को) पहुंचा चुके थे, तो तुम केहने लगे कि येह कहाँ से आ पड़ी? फ़रमा दें : येह तुम्हारी अपनी ही तरफ़से है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर ख़ूब क़ुदरत रखता है।

وَ مَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ
فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۶۶﴾

166. और उस दिन जो तक्लीफ़ तुम्हें पहुंची जब दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हो गए थे, सो वोह अल्लाह के हुक्म (ही) से थी और येह इस लिए कि अल्लाह ईमानवालों की पहचान करा दे।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۖۚ وَقِيْلَ
لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا
اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ
اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ

167. और ऐसे लोगोंकी भी पहचान करा दे जो मुनाफ़िक़ हैं और जब उनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राहमें जंग करो या (दुश्मनके ह़मले का) दिफ़ाअ़ करो तो केहने लगे अगर हम जानते कि (वाक़िअ़तन किसी ढब की) लड़ाई होगी (या हम उसे अल्लाह की राह में जंग जानते) तो ज़रूर तुम्हारी पैरवी करते, उस दिन वोह

النصف

بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ
اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿۱۶۷﴾

(ज़ाहिरी) ईमान की निस्बत खुले कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब थे, वोह अपने मुँह से वोह बातें केहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं, और अल्लाह (उन बातों) को खूब जानता है जो वोह छुपा रहे हैं।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ
اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا
عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۸﴾

168. (येह) वोही लोग हैं जिन्होंने बावजूद इसके कि खुद (घरों में) बैठे रहे अपने भाइयों की निस्बत कहा कि अगर वोह हमारा कहा मानते तो न मारे जाते, फ़रमा दें : तुम अपने आपको मौतसे बचा लेना, अगर तुम सच्चे हो।

وَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

169. और जो लोग अल्लाह की राहमें क़त्ल किए जाएं उन्हें हरगिज़ मुर्दह ख़याल (भी) न करना, बल्कि वोह अपने रब के हुज़ूर ज़िन्दा हैं उन्हें (जन्नत की ने'मतों का) रिज़्क़ दिया जाता है।

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ
يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

170. वोह (हयाते जाविदानी की) उन (ने'मतों) पर फ़रहां व शादां रेहते हैं जो अल्लाहने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमा रखी हैं और अपने उन पिछलों से भी जो (ता हाल) उनसे नहीं मिल सके (उन्हें ईमान और ताअत की राह पर देख कर) खुश होते हैं कि उन पर भी न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदा होंगे।

وقف لازم

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ
فَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ ع ۱۶ ۱۷ ۸

171. वोह अल्लाह की (तजल्लियाते कुर्ब की) ने'मत और (लज़्ज़ाते विसालके) फ़ज़्लसे मसरूर रेहते हैं और इस पर (भी) कि अल्लाह ईमानवालों का अज्र ज़ाए' नहीं फ़रमाता॥

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ
بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ
اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۲﴾

172. जिन लोगोंने ज़ख़्म खा चुकने के बाद भी अल्लाह और रसूल (ﷺ) के हुक्म पर लब्बैक कहा, उनमें जो साहिबाने एहसान हैं और परहेज़गार हैं, उनके लिए बड़ा अज्र है।

مع

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ
قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ
اِيْمَانًا ۖ وَّ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ
الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾

173. (येह) वोह लोग (हैं) जिनसे लोगोंने कहा कि मुख़ालिफ़ लोग तुम्हारे मुक़ाबले के लिए (बड़ी कसरत से) जमा' हो चुके हैं सो उनसे डरो तो (इस बातने) उनके ईमान को और बढ़ा दिया और वोह केहने लगे : हमें अल्लाह काफ़ी है और वोह क्या अच्छा कारसाज़ है।

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ
يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّ اتَّبَعُوْا رِضْوَانَ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۴﴾

174. फिर वोह (मुसलमान) अल्लाह के इन्आ़म और फ़ज़्ल के साथ वापस पल्टे उन्हें कोई गज़न्द न पहुंची और उन्होंने रज़ाऐ इलाही की पैरवी की, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ
اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾

175. बेशक येह (मुख़्बिर) शैतान ही है जो (तुम्हें) अपने दोस्तों से धमकाता है, पस उनसे मत डरा करो और मुझ ही से डरा करो अगर तुम मोमिन हो।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي
الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ
يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي
الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾

176. (ऐ ग़मगुसारे आ़लम!) जो लोग कुफ़्र (की मदद करने) में बहुत तेज़ी करते हैं वोह आपको ग़मज़दा न करें, वोह अल्लाह (के दीन) का कुछ नहीं बिगाड़ सक्ते, और अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे, और उनके लिए ज़बरदस्त अ़ज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ
بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۷﴾

177. बेशक जिन्होंने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीद लिया है वोह अल्लाह का कुछ नुक़्सान नहीं कर सक्ते, और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا
نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا
نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ

178. और काफ़िर येह गुमान हरगिज़ न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं (येह) उनकी जानों के लिए बेहतर है, हम तो (येह) मोहलत उन्हें सिर्फ़ इस लिए दे रहे हैं कि वोह गुनाह में और बढ़ जाएं और उनके लिए

عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

(बिल.आख़िर) ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى
مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ
مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا
وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾

179. और अल्लाह मुसलमानों को हरगिज़ इस हाल पर नहीं छोड़ेगा जिस पर तुम (इस वक़्त) हो जब तक वोह नापाक को पाकसे जुदा न कर दे, और अल्लाह की येह शान नहीं कि (ऐ आ़म्मतुन नास!) तुम्हें ग़ैब पर मुत्तला' फ़रमा दे लेकिन अल्लाह अपने रसूलों से जिसे चाहे (ग़ैबके इ़ल्म के लिए) चुन लेता है, सो तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो तुम्हारे लिए बड़ा सवाब है।

وَ لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا
لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ
مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ لِلّٰهِ
مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ
اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ ع ١٨ ع ٩

180. और जो लोग उस (मालो दौलत) में से देने में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाहने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता किया है वोह हरगिज़ उस बुख़्ल को अपने ह़क़ में बेहतर ख़याल न करें, बल्कि येह उनके ह़क़में बुरा है, अ़नक़रीब रोज़े क़ियामत उन्हें (गले में) इस माल का तौक़ पहनाया जाएगा जिस में वोह बुख़्ल करते रहे होंगे, और अल्लाह ही आस्मानों और ज़मीन का वारिस है (या'नी जैसे अब मालिक है ऐसे ही तुम्हारे सबके मर जाने के बाद भी वोही मालिक रहेगा), और अल्लाह तुम्हारे सब कामों से आगाह है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ
قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ نَحْنُ
اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا
وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّ
نَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾

181. बेशक अल्लाहने उन लोगोंकी बात सुन ली जो केहते हैं कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी हैं, अब हम उनकी सारी बातें और उनका अंबिया को नाह़क़ क़त्ल करना (भी) लिख रखेंगे और (रोज़े क़ियामत) फ़रमाएंगे कि (अब तुम) जला डालने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

وقف لازم

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ اَنَّ
اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۸۲﴾

182. येह उन आ'माल का बदला है जो तुम्हारे हाथ खुद आगे भेज चुके हैं और बेशक अल्लाह बंदों पर जुल्म करनेवाला नहीं है।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ
اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا
بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ
جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَ بِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۳﴾

183. जो लोग (या'नी यहूद हीला जूई के तौर पर) येह केहते हैं कि अल्लाह ने हमें येह हुक्म भेजा था कि हम किसी पयग़म्बर पर ईमान न लाएं जब तक वोह (अपनी रिसालतके सबूत में) ऐसी क़ुरबानी न लाए जिसे आग (आ कर) खा जाए, आप (उनसे) फ़रमा दें : बेशक मुझ से पहले बहुत से रसूल वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए और उस निशानी के साथ भी (आए) जो तुम केह रहे हो तो (उसके बा वजूद) तुमने उन्हें शहीद क्यों किया अगर तुम (इत्ने ही) सच्चे हो।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ
مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ
وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾

184. फिर भी अगर आपको झुटलाएं तो (महबूब आप रंजीदह ख़ातिर न हों) आपसे पहले भी बहुत से रसूलों को झुटलाया गया जो वाज़ेह़ निशानियां (या'नी मो'जिज़ात) और सह़ीफ़े और रौशन किताब ले कर आए थे।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَ اِنَّمَا
تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ
الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾

185. हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है, और तुम्हारे अज्र पूरे के पूरे तो क़ियामत के दिन ही दिए जाएंगे, पस जो कोई दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वोह वाक़िअ़तन कामयाब हो गया, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं।

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ۫
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا
اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ

186. (ऐ मुसलमानो!) तुम्हें ज़रूर बिज़.ज़रूर तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी जानोमें आज़माया जाएगा और तुम्हें बहर सूरत उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई थी और उन लोगों से जो मुशरिक हैं बहुत से अज़िय्यत नाक (ता'ने) सुनने होंगे, और अगर तुम सब्र

تَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾

करते रहो और तक़्वा इख़्तियार किए रखो तो येह बड़ी हिम्मत के कामों से है।

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَ اشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

187. और जब अल्लाहने उन लोगों से पुख़्ता वा'दा लिया जिन्हें किताब अ़ता की गई थी कि तुम ज़रूर उसे लोगों से साफ़ साफ़ बयान करोगे और (जो कुछ उसमें बयान हुआ है) उसे नहीं छुपाओगे तो उन्हों ने इस अ़हद को पसे पुश्त डाल दिया और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत वसूल कर ली, सो येह उनकी बहुत ही बुरी ख़रीदारी है।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾

188. आप ऐसे लोगों को हरगिज़ (नजात पानेवाला) ख़याल न करें जो अपनी कारस्तानियों पर खुश हो रहे हैं और नाकर्दह आ'माल पर भी अपनी ता'रीफ़ के ख़्वाहिश मन्द हैं (दोबारा ताकीद के लिए फ़रमाया) पस आप उन्हें हरगिज़ अ़ज़ाब से नजात पानेवाला न समझें, और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ ع ۱۹/۱۰

189. और सब आस्मानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (सो तुम अपना ध्यान और तवक्कल उसी पर रखो)।

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

190. बेशक आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़ में और शबो रोज़ की गर्दिशमें अक़्ले सलीमवालों के लिए (अल्लाहकी क़ुदरतकी) निशानियां हैं।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ

191. येह वोह लोग हैं जो (सरापा नियाज़ बन कर) खड़े और (सरापा अदब बन कर) बैठे और (हिज्रमें तड़पते हुए) अपनी करवटों पर (भी) अल्लाह को याद करते रहते हैं और आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़ (में कारफ़रमा उसकी अ़ज़मत और हुस्न के जल्वों) में फ़िक्र करते रहते हैं (फिर उसकी मा'रेफ़त से लज़्ज़त आशना हो कर

فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

पुकार उठते हैं) ऐ हमारे रब ! तूने येह (सब कुछ) बे हिक्मत और बे तद्बीर नहीं बनाया, तू (सब कोताहियों और मजबूरियों से) पाक है पस हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾

192. ऐ हमारे रब! बेशक तू जिसे दोज़ख़ में डाल दे तो तूने उसे वाक़िअ़तन रुस्वा कर दिया, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ ۚ

193. ऐ हमारे रब! (हम तुझे भूले हुए थे) सो हमने एक निदा देनेवाले को सुना जो ईमान की निदा दे रहा था कि (लोगो !) अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब ! अब हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी ख़ताओं को हमारे (नविश्तए आ'माल) से महू फ़रमा दे और हमें नेक लोगों की संगतमें मौत दे।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾

194. ऐ हमारे रब ! और हमें वोह सब कुछ अ़ता फ़रमा जिसका तूने हम से अपने रसूलों के ज़रीए़ वा'दा फ़रमाया है, और हमें क़ियामतके दिन रुस्वा न कर, बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ

195. फिर उनके रबने उनकी दुआ़ क़ुबूल फ़रमा ली (और फ़रमाया) यक़ीनन मैं तुममें से किसी मेहनतवाले की मज़दूरी ज़ाए' नहीं करता ख़्वाह मर्द हो या औ़रत, तुम सब एक दूसरेमें से (ही) हो, पस जिन लोगोंने (अल्लाहके लिए) वतन छोड़ दिए और (उसीके बाइ़स) अपने घरों से निकाल दिए गए और मेरी राह में सताए गए और (मेरी ख़ातिर) लड़े और मारे गऐ तो मैं ज़रूर उनके गुनाह उन (के नामए आ'माल) से मिटा दूंगा और

لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ
مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾

उन्हें यक़ीनन उन जन्नतों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नेहरें बेहती होंगी, येह अल्लाह के हुज़ूर से अज्र है, और अल्लाह ही के पास (इससे भी) बेहतर अज्र है।

وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ
یُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ وَ
مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِمْ خٰشِعِیْنَ لِلّٰهِ ۙ
لَا یَشْتَرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا
قَلِیْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾

199. और बेशक कुछ एहले किताब ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब पर भी (ईमान लाते हैं) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है और जो उनकी तरफ़ नाज़िल की गई और उनके दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके रेहते हैं और अल्लाह की आयतों के इ़वज़ क़लील दाम वसूल नहीं करते, येह वोह लोग हैं जिनका अज्र उनके रब के पास है, बेशक अल्लाह हिसाबमें जल्दी फ़रमानेवाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا
وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا ۟ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ

200. ऐ ईमान वालो! सब्र करो और साबित क़दमीमें (दुश्मन से भी) ज़ियादा मेहनत करो और (जिहादके

ع ٢٠

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾ ع

लिए) खूब मुस्तइद रहो, और (हमेशा) अल्लाह का तक़्वा क़ाइम रखो ताकि तुम कामयाब हो सको।

आयातुहा 176	4 सूरतुन-निसाइ म-दनिय्यतुन 92	रुकूआतुहा 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ
مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا
كَثِيْرًا وَّ نِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ
تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿١﴾

1. ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम्हारी पैदाइश (की इब्तिदाअ) एक जान से की फिर उसी से उसका जोड़ पैदा फ़रमाया फिर उन दोनोंमें से बकसरत मर्दों और औरतों (की तख़्लीक़) को फैला दिया, और डरो उस अल्लाह से जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और क़राबतों (में भी तक़्वा इख़्तियार करो), बेशक अल्लाह तुम पर निगहबान है।

وَ اٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَ لَا
تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا
تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿٢﴾

2. और यतीमों को उनके माल दे दो और बुरी चीज़को उ़मदा चीज़ से न बदला करो और न उनके माल अपने मालों में मिला कर खाया करो, यक़ीनन येह बहुत बड़ा गुनाह है।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى
فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ
مَثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ
اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ﴿٣﴾ ؕ

3. और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीम लड़कियों के बारे में इन्साफ़ न कर सकोगे तो उन औ़रतों से निकाह़ करो जो तुम्हारे लिए पसन्दीदह और ह़लाल हों, दो दो और तीन तीन और चार चार (मगर येह इजाज़त बशर्ते अ़द्ल है) फिर अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम (ज़ाइद बीवियोंमें) अ़द्ल नहीं कर सकोगे तो सिर्फ़ एक ही औ़रत से (निकाह करो) या वोह कनीज़ें जो (शरअ़न) तुम्हारी मिल्कियत में आई हों, येह बात उससे क़रीबतर है कि तुमसे ज़ुल्म न हो।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓـًٔا مَّرِیْٓـًٔا ﴿۴﴾

4. और औ़रतों को उनकी महर खुश दिलीसे अदा किया करो, फिर अगर वोह उस (महर) में से कुछ तुम्हारे लिए अपनी खुशी से छोड़ दें तो तब उसे (अपने लिए) साज़गार और खुशगवार समझ कर खाओ।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِیْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِیٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِیْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۵﴾

5. और तुम बे समझों को अपने (या उनके) माल सुपुर्द न करो जिन्हें अल्लाहने तुम्हारी मईशत की उस्तुवारी का सबब बनाया है । हां उन्हें उसमें से खिलाते रहो और पहनाते रहो और उनसे भलाई की बात किया करो।

وَابْتَلُوا الْیَتٰمٰی حَتّٰۤی اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْۤا اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَاۤ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ یَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِیًّا فَلْیَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِیْرًا فَلْیَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَیْهِمْ ؕ وَكَفٰی بِاللّٰهِ حَسِیْبًا ﴿۶﴾

6. और यतीमों की (तरबियतन) जांच और आज़माइश करते रहो यहां तक कि निकाह् (की उ़म्र) को पहुंच जाएं फिर अगर तुम उनमें होशियारी (और हुस्ने तदबीर) देख लो तो उनके माल उनके ह्वाले कर दो, और उनके माल फ़ुज़ूल ख़र्ची और जल्दबाज़ी में (इस अंदेशे से) न खा डालो कि वोह बड़े हो कर (वापस ले) जाएंगे, और जो कोई खुशह़ाल हो वोह (माले यतीम से) बिल्कुल बचा रहे और जो खुद नादार हो उसे (सिर्फ़) मुनासिब ह्द तक खाना चाहिए, और जब तुम उनके माल उनके सुपुर्द करने लगो तो उन पर गवाह बना लिया करो, और ह़िसाब लेनेवाला अल्लाह ही काफ़ी है।

لِلرِّجَالِ نَصِیْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِیْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِیْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۷﴾

7. मर्दों के लिए उस (माल) में से ह़िस्सा है जो मां बाप और क़रीबी रिश्तेदारोंने छोड़ा हो और औ़रतों के लिए (भी) मां बाप और क़रीबी रिश्तेदारों के तर्केमें से ह़िस्सा है। वोह तर्का थोड़ा हो या ज़ियादा (अल्लाहका) मुक़र्रर कर्दह ह़िस्सा है।

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰی

8. और अगर तक़्सीमे (विरासत) के मौक़े' पर (ग़ैर

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ
مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٨﴾
وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ
خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا
عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا
قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٩﴾

वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मोहूताज मौजूद हों तो उसमें से कुछ उन्हें भी दे दो और उनसे नेक बात कहो।

9. और (यतीमों से मुआ़मला करने वाले) लोगों को डरना चाहिए कि अगर वोह अपने पीछे ना तवां बच्चे छोड़ जाते तो (मरते वक़्त) उन बच्चोंके ह़ाल पर (कितने) ख़ौफ़ज़दा (और फ़िक्रमंद) होते, सो उन्हें (यतीमों के बारे में) अल्लाह से डरते रेहना चाहिए और (उनसे) सीधी बात केहनी चाहिए।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى
ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ
نَارًا ؕ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ﴿١٠﴾ ع ١٢

10. बेशक जो लोग यतीमोंके माल नाह़क़ तरीक़े से खाते हैं वोह अपने पेटोंमें निरी आग भरते हैं, और वोह जल्द ही दहकती हुई आग में जा गिरेंगे।

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ
مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ
نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا
تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا
النِّصْفُ ؕ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ
كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ
وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ
فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ
مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا

11. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद (की विरासत) के बारे में हुक्म देता है कि लड़के के लिए दो लड़कियों के बराबर हिस्सा है, फिर अगर सिर्फ़ लड़कियां ही हों (दो या) दो से ज़ाइद तो उनके लिए उस तर्के का दो तिहाई हिस्सा है, और अगर वोह अकेली हो तो उसके लिए आधा है, और मूरिस के मां बाप के लिए उन दोनों में से हर एक को तर्के का छठ्ठा हिस्सा (मिलेगा) बशर्ते कि मूरिस की कोई औलाद हो, फिर अगर उस मैयत (मूरिस) की कोई औलाद न हो और उसके वारिस सिर्फ़ उसके मां बाप हों तो उसकी मां के लिए तिहाई है (और बाक़ी सब बापका हिस्सा है), फिर अगर मूरिसके भाई बहन हों तो उसकी मां के लिए छठ्ठा हिस्सा है (येह तक़्सीम) उस वसिय्यत (के पूरा करने) के बाद जो उसने की हो या क़र्ज़ (की अदाएगी) के बाद (होगी), तुम्हारे बाप और तुम्हारे

تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ؕ
فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱﴾

बेटे तुम्हें मा'लूम नहीं कि फ़ायदा पहुंचाने में उनमें से कौन तुम्हारे क़रीबतर है, येह(तक़्सीम) अल्लाह की तरफ़ से फ़रीज़ा (या'नी मुक़र्रर) है, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَ لَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ
مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ
اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ
اَوْ دَيْنٍ ؕ وَ اِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ
كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّ لَهٗۤ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ
فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ
فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ
شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ
وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ ؕ

12. और तुम्हारे लिए उस (माल) का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ जाएं बशर्ते कि उनकी कोई औलाद न हो, फिर अगर उनकी कोई औलाद हो तो तुम्हारे लिए उनके तर्केसे चौथाई है (येह भी) उस वसिय्यत (के पूरा करने) के बाद जो उन्होंने की हो या क़र्ज़ (की अदाएगी) के बाद, और तुम्हारी बीवियों का तुम्हारे छोड़े हुऐ (माल) में से चौथा हिस्सा है बशर्तेकि तुम्हारी कोई औलाद न हो, फिर अगर तुम्हारी कोई औलाद हो तो उनके लिए तुम्हारे तर्केमें से आठवाँ हिस्सा है तुम्हारी उस (माल) की निस्बत की हुई वसिय्यत (पूरी करने) या (तुम्हारे) क़र्ज़ की अदाएगी के बाद, और अगर किसी ऐसे मर्द या औ़रत की विरासत तक़्सीम की जा रही हो जिसके न मां बाप हों न कोई औलाद और उसका (मां की तरफ़से) एक भाई या एक बहन हो (या'नी अख़्याफ़ी भाई या बहन) तो उन दोनों में से हर एक के लिए छठ्ठा हिस्सा है, फिर अगर वोह भाई बहन एक से ज़ियादा हों तो सब एक तिहाई में शरीक होंगे (येह तक़्सीम भी) उस वसिय्यत के बाद (होगी) जो (वारिसों को) नुक़्सान पहुंचाए बिग़ैर की गई हो या क़र्ज़ (की अदाएगी) के बाद, येह अल्लाह की तरफ़ से हुक्म है, और अल्लाह ख़ूब इल्मो हिल्मवाला है।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

13. येह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दह) हदें हैं, और जो

وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ
حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا
فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾ ع ٢ ٤ ١٣
وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ
فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً
مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ
فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ
اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾
وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ
فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾
اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ
يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ
يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾
وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की फ़रमां बरदारी करे उसे वोह बहिश्तों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे नेहरें रवां हैं उनमें हमेशा रहेंगे और येह बड़ी कामयाबी है।

14. और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़रमानी करे और उसकी हुदूद से तजावुज़ करे उसे वोह दोज़ख़में दाख़िल करेगा जिसमें वोह हमेशा रहेगा और उसके लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

15. और तुम्हारी औरतों में से जो भी कोई बदकारी का इर्तिकाब कर बैठें तो उन पर अपने लोगों में से चार मर्दों की गवाही तलब करो, फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औरतों को घरों में बंद कर दो यहां तक कि मौत उन के अ़र्सए ह़यात को पूरा कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई राह (या'नी नया ह़ुक्म) मुक़र्रर फ़रमा दे।

16. और तुम में से जो भी कोई बदकारी का इर्तिकाब करें तो उन दोनों को ईज़ा पहुंचाओ, फिर अगर वोह तौबा कर लें और (अपनी) इस्लाह़ कर लें तो उन्हें सज़ा देने से गुरेज़ करो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला महरबान है।

17. अल्लाह ने सिर्फ़ उन्हीं लोगों की तौबा क़ुबूल करने का वा'दा फ़रमाया है जो नादानी के बाइ़स बुराई कर बैठें फिर जल्द ही तौबा कर लें पस अल्लाह ऐसे लोगों पर अपनी रह़मत के साथ रुजूअ़ फ़रमाएगा, और अल्लाह बड़े इ़ल्म बड़ी ह़िक्मतवाला है।

18. और ऐसे लोगों के लिए तौबा (की क़ुबूलियत) नहीं

السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ
الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَ لَا
الَّذِیْنَ یَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓىِٕكَ
اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ﴿۱۸﴾

है जो गुनाह करते चले जाएं यहां तक कि उनमें से किसी के सामने मौत आ पहुंचे तो (उस वक़्त) कहे कि मैं अब तौबा करता हूं और न ही ऐसे लोगों के लिए है जो कुफ़्र की ह़ालत पर मरें, उनके लिए हमने दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَحِلُّ لَكُمْ اَنْ
تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَ لَا تَعْضُلُوْهُنَّ
لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ اِلَّاۤ
اَنْ یَّاْتِیْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَیِّنَةٍ ۚ
وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ
كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْـًٔا
وَّیَجْعَلَ اللّٰهُ فِیْهِ خَیْرًا كَثِیْرًا ﴿۱۹﴾

19. ऐ ईमानवालो! तुम्हारे लिए येह ह़लाल नहीं कि तुम ज़बरदस्ती औरतों के वारिस बन जाओ, और उन्हें इस ग़रज़ से न रोक रखो कि जो माल तुमने उन्हें दिया था उस में से कुछ (वापस) ले जाओ सिवाए इसके कि वोह खुली बदकारी की मुर्तकिब हों, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बरताव करो, फिर अगर तुम उन्हें नापसंद करते हो तो मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उस में बहुत सी भलाई रख दे।

وَ اِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ
مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَیْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ
قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَیْـًٔا ؕ
اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۲۰﴾

20. और अगर तुम एक बीवी के बदले दूसरी बीवी बदलना चाहो और तुम उसे ढेरों माल दे चुके हो तब भी उसमें से कुछ वापस मत लो, क्या तुम नाह़क़ इल्ज़ाम और सरीह़ गुनाह के ज़रीए वोह माल (वापस) लेना चाहते हो?

وَ كَیْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى
بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ
مِّیْثَاقًا غَلِیْظًا ﴿۲۱﴾

21. और तुम उसे कैसे वापस ले सक्ते हो हालांकि तुम एक दूसरे से पेहलू ब पेहलू मिल चुके हो और वोह तुमसे पुख़्ता अ़हद (भी) ले चुकी हैं।

وَ لَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ
النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

22. और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे बापदादा निकाह कर चुके हों मगर जो (इस हुक्म से

فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۗ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ ع ٣ ٨ ١٤

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَ
اَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ
الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ
الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ
الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَ
رَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ
نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫
فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَآئِلُ
اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَ
اَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا
قَدْ سَلَفَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۙ ﴿٢٣﴾

पहले) गुज़र चुका (वोह मुआफ़ है), बेशक येह बड़ी बे हयाई और ग़ज़ब (का बाइस), है और बहुत बुरी रविश है।

23. तुम पर तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं और भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी (वोह) माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो और तुम्हारी रज़ाअ़त में शरीक बहनें और तुम्हारी बीवियों की माएं (सब) हराम कर दी गई हैं और (इसी तरह) तुम्हारी गोद में परवरिश पानेवाली वोह लड़कियां जो तुम्हारी उन औ़रतों (के बतन) से हैं जिनसे तुम सोहबत कर चुके हो (भी हराम हैं) फिर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर (उनकी लड़कियों से निकाह करने में) कोई हर्ज नहीं और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां (भी तुम पर हराम हैं) जो तुम्हारी पुश्त से हैं और येह (भी हराम है) कि तुम दो बहनों को एक साथ (निकाह में) जमा' करो सिवाए इसके कि जो दौरे जहालत में गुज़र चुका। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला महरबान है।